शिकारी कुत्तों की तरह उत्सुक तमाशबीनों की भीड़ में से रास्ता बनाते हुए, अपने प्यारे बोझ को उठाये डाक्टर आगे बढ़े। उनके चेहरे पर ऐसा भाव था जैसे उनका ही कोई आत्मीय मर गया हो और इस भाव से सहम कर भीड़ छँट गयी।

लोगों ने देखा कि एम्बुलेंस में मरीज़ को सुलाने के बिछौने पर डाक्टर ने उसे नहीं लिटाया और ड्राइवर से सिर्फ इतना ही कहा, "बिल्सन, जितन तेज चला सको, चलाओ।"

बस इतनी सी बात है। यह भी कोई कहानी हुई? दूसरे दिन सवेरे अखबारों में समाचार छपा जिसका अन्तिम वाक्य इन तमाम घटनाओं को जोड़ने में आपकी सहायता कर सकता है। (जैसे उसने मेरी सहायता की है।)

नं. ४८, ईस्ट स्ट्रीट से बैलेव्यू अस्पताल में लायी गयी, उपवासजनित दुर्बलता से बेहोश, एक लड़की का उस समाचार में हाल छपा था। और उसके अन्तिम शब्द थे :

"उपचार करने वाले ऐम्बुलैंस डाक्टर, बिल जैकसन का कहना है कि लड़की बच जायेगी।"

# पुलिस और प्रार्थना

मैडिसन चौक की एक बैंच पर सोपी बेचैनी से करवटें बदल रहा था। जब जंगली बत्तखें, रात में भी जोर से चीखने लगें, जब सील के चमड़े के ओवरकोट के अभाव में स्त्रियाँ अपने पतियों से अधिक सट कर बैठने लगें और जब बाग में पड़ी हुई बैंच पर सोपी बेचैनी से करवटें बदलने लगे, तब आप कह सकते हैं कि सर्दी का आगमन होने ही वाला है।

सोपी की गोद में एक सूखा हुआ पत्ता आ गिरा। यह पाला पड़ने की पूर्वसूचना थी। मैडिसन चौक के निवासियों के प्रति पाला महाशय बहुत

ही उदार हैं और अपने वार्षिक आगमन की पूर्वसूचना उन्हें भेज देते हैं। हर चौराहे पर पाला महाशय, उत्तरी पवन को, जो फुटपाथ के निवासियों के लिए चपरासी का काम करता है, अपना विजिटिंग कार्ड सूखे पत्तों के रूप में दे देते हैं, ताकि वे उनके स्वागत को तैयार रहें।

सोपी के मस्तिष्क ने इस तथ्य को स्वीकार कर लिया कि अब उसे आनेवाली कठिनाइयों का सामना करने के लिए कमर कसनी पड़ेगी और इसी कारण आज वह बेंच पर बेचैनी से करवटें बदल रहा था।

शीत से बचने के लिए सोपी के दिमाग में कोई ऊँची कल्पनाएँ नहीं थीं। भूमध्यसागर के किनारे या विसूवियस की खाड़ी के मादक आसमान के नीचे उद्देश्यहीन घूमने की उसकी महत्वाकांक्षा नहीं थी। उसकी आत्मा तो सिर्फ यह चाहती थी कि तीन महीने जेल में कट जाँय। तीन महीने तक रहने, खाने की निश्चित व्यवस्था, हमजोलियों का सहवास और कड़ाके की सर्दी एवं पुलिस के सिपाहियों से रक्षण—यही उसकी वांछनाओं का सार था।

बरसों तक ब्लैकवैल का महमाननवाज जेलखाना ही उसका सर्दियों का निवास-स्थान रहा है। जिस प्रकार न्यूयार्क के अन्य भाग्यवान लोग हर वर्ष सर्दियाँ बिताने के लिए रिवीरा या पामबीच के टिकट कटाते थे उसी प्रकार सोपी ने भी जाड़ों में जेल में हिजरत करने की मामूली व्यवस्था कर ली थी। और अब वह समय आ गया था। पिछली रात उसी चौक में फव्वारे के पास एक बेंच पर उसने रात काटी; परन्तु कोट के नीचे, घुटनों पर और कमर पर लपेटे हुए तीन मोटे मोटे अखबार भी सर्दी से उसकी रक्षा नहीं कर सके थे। इसलिए उसे जेल की याद सताने लगी। शहर के गरीबों के लिए सोने की जो धर्मार्थ व्यवस्था की जाती थी, वह उसे पसन्द नहीं थी। सोपी की राय में परोपकार से कानून कहीं अधिक दयालु था। शहर में नगरपालिका की ओर से कई सदाव्रत और संस्थाएँ चलती थीं, जहाँ उसके खाने और सोने की सामान्य व्यवस्था हो सकती थी। परन्तु सोपी जैसी स्वाभिमानी आत्माओं को, दान की यह भिक्षा असहनीय बोझ लगती थी। दान के हाथों प्राप्त की गयी किसी भी सहायता का मूल्य, आपको रुपयों से नहीं तो मानभंग से चुकाना ही पड़ता है। जिस प्रकार सीजर के साथ ब्रूटस था, उसी प्रकार धर्मशाला की हर चारपाई के साथ स्नान करने की सजा और सदाव्रत की रोटी के हर टुकड़े के साथ अपने व्यक्तिगत जीवन की छानबीन का दण्ड, आवश्यक रूप से जुड़ा रहता है। इसलिए कानून के

महमान बनना ही बेहतर है क्योंकि कानून, नियमों से संचालित होने पर भी, किसी शरीफ आदमी के व्यक्तिगत जीवन में दखल नहीं देता।

जेल जाने का निश्चय करते ही सोपी ने तुरन्त तैयारियाँ आरम्भ कर दीं। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के अनेक आसान तरीके हैं। सब से सुखद उपाय यह था कि किसी बढ़िया होटल में शानदार भोजन किया जाय और उसके बाद स्वयं को दिवालिया घोषित कर बिना शोरगुल हुए, चुपचाप पुलिस के हाथों में पहुँचा जाय। इसके बाद की व्यवस्था कोई समझदार मैजिस्ट्रेट अपने आप कर देगा।

सोपी बैंच से उठ कर चौक के बाहर निकला और पक्की सड़कों के जाल को लाँघता हुआ वहाँ पहुँचा, जहाँ पाँचवी सड़क ब्राडवे से मिलती है। वह ब्राडवे की तरफ मुड़ा और एक चमचमाते हुए होटल के सामने रुका, जहाँ हर रात रेशमी कपड़ों की तड़क-भड़क दिखाई देती है, अंगूर की बढ़िया शराब की नदियाँ बहती है और स्वादिष्ट व्यंजनों के ढेर लगे मिलते हैं।

सोपी को कमर से ऊपर पहिने हुए कपड़ों पर तो पूर्ण विश्वास था। उसकी दाढ़ी बनी हुई थी, कोट अच्छा था और बड़े दिन पर किसी मिशनरी महिला द्वारा भेंट मिली हुई टाई, उसके संभ्रान्त होने की घोषणा कर रही थी। यदि वह किसी प्रकार बिना शंका उत्पन्न किये टेबल तक पहुँच जाता, तब तो सफलता उसके हाथ में थी। शरीर का वह भाग, जो टेबल के ऊपर दिखाई देता है, वेटर के मन में किसी प्रकार का सन्देह नहीं जगा सकता। सोपी ने सोचा कि फ्राँसिसी शराब की एक बोतल, मुर्ग मुसल्लम, पुडिंग, आधा पैग शैम्पेन और एक सिगार—इतना काफी होगा। सिगार की कीमत तो एक डालर से ज्यादा नहीं होगी। सब मिला कर कीमत इतनी ज्यादा नहीं होनी चाहिये कि होटल मालिक के मन में बदला लेने की भावना उत्पन्न हो जाय; फिर भी तृप्ति इतनी होनी चाहिये कि जाड़ों के निवासस्थान तक की यात्रा आनन्द से कटे।

परन्तु जैसे ही सोपी ने होटल के दरवाजे में पैर रखा, मुख्य वेटर की नजर उसकी फटी पतलून और पुराने जूतों पर पड़ी। तुरन्त ही सुदृढ़ और सधे हुए हाथों ने उसे पकड़कर चुपचाप सड़क पर ला पटका और इस प्रकार मुर्ग मुसल्लम के बरबाद होने की नौबत टल गयी।

सोपी ब्राडवे से वापस लौटा। उसे ऐसा महसूस हुआ कि वांछित ध्येय तक पहुँचने में, यह स्वादिष्ट भोजन वाला मार्ग तो काम नहीं देगा। जेल तक पहुँचने का और कोई उपाय ढूँढ़ना चाहिये।

छठी सड़क के मोड़ पर उसे तरह तरह की चीजों से, करीने से सजायी हुई, एक काँच की खिड़की बिजली की रोशनी में जगमगाती हुई दिखाई दी। सोपी ने पत्थर उठाया और उसे शीशे पर दे मारा। चारों तरफ से लोग दौड़े और एक पुलिस का सिपाही भी आ खड़ा हुआ। सिपाही को देख कर सोपी मुस्कराया और अपनी जेबों में हाथ डाले हुए चुपचाप खड़ा रहा।

सिपाही ने तमतमा कर पूछा, "शीशा फोड़नेवाला कहाँ गया?"

सौभाग्य का स्वागत करते हुए सोपी ने व्यंग के स्वर में सहृदयता से पूछा, "क्या आप इतना भी नहीं समझते कि इसमें मेरा भी कुछ हाथ हो सकता है!"

सिपाही के दिमाग ने सोपी को दोषी मानने से इन्कार कर दिया। खिड़कियों को पत्थर मार कर तोड़ने वाले, कानून के रक्षकों से गपशप करने के लिए कहीं रुकते हैं? वे तो फौरन नौ दो ग्यारह हो जाते हैं। पुलिसमैन ने कुछ दूर सड़क पर एक आदमी को बस पकड़ने के लिए भागते देखा और अपना डंडा घुमाता हुआ वह उसके पीछे भागा। दो बार असफल होकर सोपी निराश हो गया और मटरगश्ती करने लगा।

सड़क के उस पार, एक साधारण शानशौकत का होटल था। वहाँ छोटी जेब और बड़े पेटवाले ग्राहक जाया करते थे। घटिया बर्तन और धूमिल वातावरण; पतली दाल और गन्दे मेजपोश। इस स्थान पर सोपी बिना रोक-टोक अपनी फटी पतलून और पुराने जूतों समेत जा पहुँचा। वह टेबल पर जा बैठा और पेट भर कर कबाब, कोफ्ते, केक और कचौड़ियाँ खा गया। और तब उसने वेटर के सामने यह रहस्य खोला कि ताँबे की एक पाई का भी उसने मुँह नहीं देखा है।

बड़े रौब से उसने वेटर से कहा, "अब जल्दी ही पुलिस को बुलाइये; व्यर्थ में एक शरीफ आदमी का वक्त क्यों खराब करते हैं?"

अंगारे सी लाल आँखें दिखाते हुए, कठोर शब्दों में वेटर ने कहा, "तेरे लिए और पुलिस का सिपाही?" उसने अपने साथी को आवाज दी और सोपी महाशय फिर एक बार निर्दयता से सड़क पर ला पटके गये।

सुथार के गज की तरह धीरे धीरे एक एक जोड़ को खोलता हुआ सोपी उठा और कपड़ों की धूल झाड़ने लगा। आज उसके लिए गिरफ्तारी मृग-मरीचिका हो चली थी और उसे वह सुखदायी जेल कोसों दूर दिखाई दे रही थी। कुछ दूरी पर एक दुकान के सामने खड़े हुए सिपाही ने उसे देखा और हँसता हुआ अपने रास्ते चला गया।

काफी देर इधर उधर भटकने के बाद सोपी में गिरफ्तारी की आराधना करने की हिम्मत फिर जागृत हुई। इस बार जो अवसर आया, वह नासमझ सोपी को अचूक लगा।

मनोहर और सुशील मुखमुद्रा वाली एक नवयुवती, एक दुकान की खिड़की के सामने खड़ी, अन्दर सजी हुई प्यालियों और दावातों को कुछ दिलचस्पी से देख रही थी और दो गज की दूरी पर ही कठोर मुखाकृति-वाला एक सिपाही नल का सहारा लिये खड़ा था।

सोपी ने इस बार, औरतों की छेड़-छाड़ करने वाले, घृणित और तुच्छ गुण्डे का पार्ट अदा करने की योजना बनायी। अपने शिकार की सौम्य और भोली सूरत देखकर तथा कानून के सतर्क पहरेदार को पास में खड़ा जान कर सोपी को यह सोचने का प्रोत्साहन मिला कि शीघ्र ही उसकी बाँह पर सिपाही के पंजे की उस सुखदायी पकड़ का अनुभव होगा जो उसे सर्दियों भर आरामदायक जेल में पहुँचा देगी।

सोपी ने मिशनरी महिला द्वारा भेंट दी गयी टाई को ठीक किया, सिकुड़ती हुई आस्तीनों को कोट से बाहर निकाला, टोप को तिरछी अदा से पहिना और उस युवती की तरफ बढ़ा। उसने उसकी तरफ आँख से इशारा किया, उसे देख कर खाँसा-खँखारा, और चेहरे पर बनावटी हँसी ला कर बदतमीजी से घृणित गुण्डों की तरह झूमने लगा। अपने आँख की कोर से तिरछी नजर डाल कर उसने यह देख लिया कि पुलिस का सिपाही उसे घूर रहा है। युवती दो चार कदम आगे पीछे हुई और फिर अधिक एकाग्रता से खिड़की में सजी हुई चीजों को देखने लगी। सोपी निर्भयता से आगे बढ़ कर उसके पास जा खड़ा हुआ और अपना टोप सिर से उठा कर बोला, "क्यों पंछी! कहीं कुछ तफरी का इरादा है?"

सिपाही अब भी देख रहा था। सतायी हुई युवती की उँगली के एक इशारे मात्र से सोपी अपनी मंजिल तक पहुँच सकता था। अपनी कल्पना में

वह थाने की सुखद गरमी में पहुँच भी चुका था। परन्तु युवती उसकी ओर मुँह कर के खड़ी हो गयी और अपना हाथ आगे बढ़ा कर उसके कोट की बाँह को पकड़ कर खुशी से बोली —

"जरूर दोस्त, मैं तो बिल्कुल तैयार हूँ। मैं तो खुद ही तुमसे कहने वाली थी, मगर वह सिपाही जो देख रहा था!"

वृक्ष से लता के समान अपनी देह से लिपटी हुई उस लड़की को लिये, जब सोपी पुलीसमैन के सामने से गुजरा, तो उदासी ने उसे घेर लिया। उसके भाग्य में शायद आजादी ही बदी थी।

अगले मोड़ पर ही वह उस लड़की से पिंड छुड़ाकर भागा। वहाँ से वह ऐसे मुहल्ले में पहुँच कर रुका, जहाँ रात में झूठे वादे करने वाले बेफिक्र प्रेमी और शराब-संगीत के दौर चलते हैं। फर के कोट पहिने महिलाएँ और बढ़िया ओवरकोट पहिने पुरुष, उस सुहानी हवा में टहल रहे थे। एकाएक सोपी के मन में शंका उठी कि किसी भयानक टोटके ने तो उसे गिरफ्तारी से परिमुक्त नहीं कर रखा है! इस विचार से वह कुछ घबराया, परन्तु एक भव्य नाटकघर के सामने शान से टहलते हुए एक पुलिस के सिपाही को देखते ही उसके मन में शराबी का पार्ट अदा करने की योजना, फिर बिजली की तरह कौंध गयी।

फुटपाथ पर खड़े होकर सोपी ने अपनी कर्कश आवाज में शराबियों की तरह बकना और चिल्लाना आरम्भ किया। नाच कर, चीख कर, चिल्ला कर और अनेक तरीकों से उसने आसमान सिर पर उठा लिया।

पुलिसमैन ने डंडा घुमाते हुए सोपी की तरफ पीठ करली और एक राहगीर से कहने लगा, "येल कालेज का कोई लड़का है। उन्होंने हार्टफोर्ट कालेज को आज बुरी तरह हराया है, इसीलिए खुशियाँ मना रहा है। सिर्फ हल्ला मचाता है—डर की कोई बात नहीं। इन लोगों से कुछ न कहने की हमें हिदायत है।"

दुखी हो कर सोपी ने इस असफल तिकड़म को त्याग दिया। क्या पुलिस के सिपाही उसे कभी गिरफ्तार नहीं करेंगे? उसकी कल्पना में जेल एक अप्राप्य स्वर्ग के समान लगने लगी। उसने ठंडी हवा से बचने के लिए अपने जीर्ण कोट के बटन बन्द कर लिये।

सिगार की एक दुकान में उसने एक सम्भ्रान्त मनुष्य को सिगार सुलगाते हुये देखा। अन्दर जाते समय उसने अपना रेशमी छाता दरवाजे के पास रख

दिया था। सोपी अन्दर घुसा, छाता उठाया और धीरे धीरे चहलकदमी करता हुआ आगे बढ़ गया। सिगार वाला मनुष्य जल्दी से उसके पीछे चला।

वह कुछ सख्ती से बोला, "मेरा छाता!"

चोरी पर सीनाजोरी करते हुए, सोपी उपहास करने लगा, "क्या वाकई? आपका छाता? तो फिर आप पुलिस को क्यों नहीं बुलाते? यह खूब रही—आप का छाता! जल्दी करिये साहब, पुलिस को बुलाइये, मोड़ पर ही खड़ा है!"

छाते के मालिक ने अपनी चाल धीमी कर दी। सोपी ने भी वैसा ही किया। लेकिन उसके मन में यह आशंका उठ चुकी थी कि इस बार भी भाग्य उसे धोखा दे जायेगा। सिपाही सहमा हुआ उन दोनों की ओर देखता रहा।

छातेवाले ने कहा, "जी हाँ, जी—आप जानते हैं, ऐसी गलती हो ही जाती है। अगर यह छतरी आपकी है तो मुझे माफ करें। दरअसल बात यह है कि आज सुबह ही मैंने इसे एक होटल से उठायी थी। अगर आप इसे पहचानते हैं—अगर आपकी है तो, तो मैं आशा करता हूँ कि आप मुझे..."

सोपी दुष्टता से बोला, "जी हाँ, निश्चित रूप से यह मेरी ही है।"

छतरी का तथाकथित स्वामी मैदान छोड़ कर भाग गया। पुलिसमैन भी काफी दूर पर दिखाई देनेवाली एक मोटर से, सड़क लाँघनेवाली एक सुन्दरी को बचाने के लिए चल पड़ा।

सोपी, पूर्व की तरफ मरम्मत के लिए खोदी गयी एक सड़क पर आगे बढ़ा। गुस्से से उसने छाते को एक गढ़े में फेंक दिया। सिर पर लोहे की टोपी और हाथ में डंडा लिये घूमने वाले, पुलिस समुदाय के प्रति उसका मन विरक्ति से भर गया। वह तो उनके पंजों में फँसना चाहता था और सिपाही शायद उसे, बुराई से ऊपर उठे हुए किसी राजा के समान समझ रहे थे।

अन्त में सोपी एक ऐसे मुहल्ले में पहुँचा, जहाँ कोलाहल और प्रकाश बहुत कम था। इस मार्ग से होकर वह मैडिसन चौक की दिशा में चला। घर का मोह मनुष्य को अपनी ओर खींचता ही है, चाहे उसका घर किसी पार्क की बैंच ही क्यों न हो।

लेकिन एक अत्यन्त नीरव स्थान पर सोपी के पाँव रुक गये। यहाँ एक पुराना गिरजा था—टूटा-फूटा, विलक्षण और महरावदार। बैंगनी रंग के

काँचवाली खिड़की में से मन्द प्रकाश छन रहा था और निश्चय ही अगले इतवार की प्रार्थना की तैयारी में लीन पियानो बजाने वाला परदों पर उँगलियाँ नचा रहा था।

स्वर्गीय संगीत की मधुर स्वर-लहरी बहती हुई सोपी के कानों तक आयी जिसने उसे अभिभूत कर गिरजे की चहारदीवारी से मानो जकड़ दिया।

आकाश में निर्मल स्निग्ध चाँद चमक रहा था। सड़क राहगीरों से सूनी थी। पंछी तन्द्रिल स्वरों में चहचहा रहे थे। वातावरण किसी गाँव के गिरजे के समान प्रशान्त था। प्रार्थना के स्वरों ने सोपी को सीखचों से जकड़ दिया था, क्योंकि वह उस प्रार्थना से परिचित था—उसने इसे उस युग में सुना था जब कभी उसके जीवन में पवित्र विचारों, साफ कपड़ों, आकांक्षाओं, फूलों, माताओं, बहनों और मित्रों का भी स्थान रहा था।

सोपी के मन की ग्रहणशीलता और पुराने गिरजे के पवित्र प्रभाव के सम्मिलन ने सोपी की अन्तरआत्मा में एक अद्भुत परिवर्तन ला दिया। आतंकित हो कर उसने उस गर्त की गहराई का अनुभव किया, जिसमें वह गिर चुका था। अधःपतन के दिन, घृणित आकांक्षाएँ, कुचली हुई आशाएँ, ध्वस्त मानस—जिन्होंने अब तक उसके अस्तित्व को बनाया था, उसके स्मृतिपट पर उभर आये।

और दूसरे ही क्षण, उसके हृदय ने इस नये विचार से उत्साहपूर्वक समझौता कर लिया। सहसा, उसके हृदय में अपने दुर्भाग्य से लड़ने की एक बलवती प्रेरणा उत्पन्न हुई। इस दलदल से अपने आप को बाहर निकालने का उसने निश्चय किया। वह फिर से अपने आप को मनुष्य बनायेगा। जिस बुराई ने उसे दबोच रखा है, उसे वह जीतेगा। अब भी समय है, उसकी उम्र कुछ ज्यादा नहीं। वह अपनी पुरानी आकांक्षाओं को पुनर्जीवन दे कर, बिना लड़खड़ाये पूरी करेगा। पियानो के उन मधुर स्वरों ने, उसकी आत्मा में एक हलचल मचा दी थी। कल सुबह ही वह शहर के दक्षिणी भाग में जा कर काम ढूँढ़ेगा। फर के एक व्यापारी ने उसे एक बार ड्राइवर की नौकरी देनी चाही थी। कल ही वह उसे ढूँढ़ कर नौकरी ले लेगा। वह दुनियाँ में कुछ बनेगा। वह—

सोपी ने अपनी बाँह पर किसी पकड़ का अनुभव किया। तेजी से घूमते ही उसे एक सिपाही का कठोर चेहरा दिखाई दिया।

सिपाही ने पूछा, "यहाँ क्या कर रहे हो?"

सोपी ने कहा, " जी, कुछ नहीं। "

सिपाही बोला, " कुछ नहीं ? तो मेरे साथ चलो। "

दूसरे दिन सवेरे पुलिस कोर्ट के मैजिस्ट्रेट साहब ने फरमाया, " तीन महीने की सख्त कैद। "

# एक पीले कुत्ते के संस्मरण

मुझे आशा है कि एक जानवर के द्वारा लिखा गया यह लेख पढ़ कर आप चौकेंगे नहीं। किपलिंग महोदय ने और दूसरे कई लेखकों ने इस बात को भली भाँति सिद्ध कर के दिखा दिया है कि जानवर भी लाभदायक भाषा में अपने विचार व्यक्त कर सकते हैं और आजकल तो, उन पुराने मासिक पत्रों के सिवाय जो अभी तक ब्रियान और मोण्ट पेली की जासूसी तस्वीरें छापते हैं, शायद ही कोई अखबार जानवरों की कहानी बिना प्रेस में जाता हो।

जंगलों से सम्बन्धित पुस्तकों में मिलने वाला परम्परागत साहित्य आपको इस लेख में नहीं मिलेगा – जैसे भलुवा भालू, संपिया साँप या शेरिया शेर की कहानी।

एक पीले कुत्ते से, जिसने अपना अधिकांश जीवन, न्यूयार्क के एक सस्ते फ़्लैट के कोने में सैटिन के किसी पुराने पेटीकोट पर पड़े पड़े बिताया हो (जिसे मालकिन ने श्रीमती लॉगशोरमेन की दावत में शराब गिर जाने के कारण कोने में फेंक दिया था), वाक्चातुर्य दिखाने की आशा नहीं की जा सकती।

मेरा जन्म एक पीले पिल्ले के रूप में हुआ। तारीख, स्थान, वजन और नस्ल–अज्ञात। मेरे जीवन की सबसे पहली याद यह है कि ब्राडवे और २३ वीं सड़क के नुक्कड़ पर एक औरत मुझे टोकरी में रखे हुए, किसी मोटी महिला के हाथों बेचने की कोशिश कर रही थी। मेरी मालकिन मुझे एक